रात्रीक्लास ओमशांति 28.1.68

सभी का कनेक्शन है शिवबाबा के साथ। जब तक शिवबाबा के खजाने में जमा न हो तो उसका कुछ भी बनता नहीं है। शिवबाबा साथ कनेक्शन है ब्रह्मा द्वारा। सेंटर खुलते हैं तो शिवबाबा के खजाने में जमा होना चाहिए। ऐसे नहीं अपना आपे ही जाकर खोले। जैसे लीला ने कुछ भी करती है, जो मिलता है, जमा कुछ भी नहीं है। जब तक शिवबाबा के पास न आये। खजाने में पहुंची नहीं तो मिली कुछ भी नहीं। और ही बड़ा भारी दंड चढ़ जाता है। ऐसे नहीं रेस कर बिगर श्रीमत गीतापाठशाला खोल दें। सेंटर खोल दिया। उनको कुछ भी बनता नहीं है। शिवबाबा के खजाने से उनका कनेक्शन है नहीं। अगर यहीं से सीख जाय बनाते हैं तो भी बहुत कम पद पाय लेंगे। अशुद्ध अहंकार किसका बाप के पास चल न सके। बाप तो समर्थ है ना। शिवबाबा साथ अढंगा कोई चल न सकेंगे। गिर पड़ेंगे ;क्योंकि शिवबाबा एक ही हट्टी है ना। शिवबाबा ब्रह्मा बाबा से कनेक्शन ही नहीं तो फायदा ही क्या? और ही गिर पड़ेंगे। अशुद्ध अहंकार कोई का भी बाप पास चल न सके। पुरुषार्थ रहता है कैसे भी करके बाप से उंच ते उंच पद पावें। दैवी गुण धारण करें। लड़ने–झगड़ने वाले पद पाय न सकेंगे। बहुत2 मीठा बनना है। बाप समझाते हैं याद की यात्रा। यह बड़ी उंची बात है। ऐसे कोई कब समझ न सके। पढ़ाई से यह पद मिल सकता है। विश्व का मालिक बनना है। इसमें गुप्त बड़ी मेहनत है। स्वभाव को बदलना बड़ा मुश्किल है। देहाभिमान के साथ फिर और विकार भी आते हैं। कितना भी समझाओ पूंछ सीधा नहीं होता है। बाबा कितना क्लीयर कर समझाते हैं। है बहुत सहज ;परंतु मेहनत बहुत है। आत्माभिमानी बनना है ना। आत्माभिमानी बन न सुनेंगे तो इतना असर नहीं होगा। आत्मा में संस्कार धारण होती है ना। देहअभिमान कारण मनुष्यों की हालत क्या हुई है। अब फिर आत्माभिमानी बनने से तुम कितना उंच पद पाते हो। सब्जेक्ट सबसे तीखी है आत्माभिमानी बनने की। नालेज तो सहज है। गृहस्थ व्यवहार में रहना भी कोई बड़ी बात नहीं। समझा। फिर से समझाया है। दूसरे.....तो जाना ही नहीं है। क्रिश्चियन लोग बाईबल के सिवाय और कुछ उठाते नहीं हैं। तुमको कोई शास्त्र आदि की दरकार नहीं। गीता भी भक्ति मार्ग की है। वह हम क्यों उठावें? देहअभिमान गया तो सब विकार चले जावेंगे। ऐसी2 अवस्था में जाना है। हिसाब–किताब चुक्तू कर जावेंगे। वहां तो विकार की बात ही नहीं। योगबल से सारे विश्व को पवित्र बनाते हैं। इतनी योग में ताकत है। एक दिन समझेंगे योग यथार्थ यह है। बाकी है हठयोग। हठयोग में यह भी एक चित्र बनाना चाहिए। रस्सी उपर से डाल फिर निकालते हैं। देखना चाहिए क्या2 सिखलाते हैं। तुमको मना नहीं है। शुरूड़ बुद्धि चाहिए। जैसे हनुमान का मिसाल। जाकर जूतों में बैठा। उनको कोई हिलाय न सके। तुम भी महावीर हो ना। चाहिए बहुत बहादुर। निडर भी हो। ज्ञान से घेराव डालना है। तुमने रावणराज्य में पर घेराव डाला है। विजय जरूर पावेंगे। ऐसे बहादुरि बहुत थोड़े हैं। पूछे बिगर तो कोई जाय न सके। नहीं तो आबरू गंवाते हैं चलन ,वातावरण से। होता तो सब ड्रामा अनुसार ही है। जो सर्विस पर हैं उन्हों की ही बात है। आगे चलकर ऐसे2 क्लीयर चित्र निकलेंगे जो चित्र से ही आपे ही समझ जावेंगे। कहना भी सबको यही है अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। बाप ही पतित–पावन है। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगमयुगे आता हूं। तो उन्हों ने फिर युगे2 कह दिया है। संगमयुगे तो चाहिए ना, जो कलियुग बदल सतयुग हो। पुरुषार्थ तो बच्चे बहुत करते रहते हैं। बच्चे खुद भी समझ जावेंगे कौन निमित्त बनते हैं। अभी मनुष्य समझदार बनते हैं। तमोप्रधान माना बेसमझ। बाप कहते हैं रावणराज्य में तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो। सर्विस करने वाले बच्चे ही बाप के दिल पर चढ़ते हैं। भल देरी से आते हैं। वह और ही तीखे हो जाते हैं। गैलप करते रहते हैं। तुम बच्चों ने तो हिस्ट्री सुनी है इन्होंने घर–बार कैसे छोड़ा। कैसे रात को भागे। फिर इतने बच्चों को बैठ पाला। इसको ही भट्ठी कहा जाता है। फिर भट्ठी से नम्बरवार निकलते हैं। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट और नमस्ते।